



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (11-10-17)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा ड्रामा की भावी पर अचल अडोल रहने वाले, अपनी अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन की अनुभवी आत्मायें, विश्व की दुःखी, अशान्त आत्माओं को सूक्ष्म शक्तियों की सकाश देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद मधुबन बेहद घर से स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - जैसे हम सबका मीठा बाबा सबसे न्यारा सबका प्यारा है। ऐसे हम सबको भी अपने समान न्यारा प्यारा बना रहा है। बाबा का प्यार ही कितनी सेवा करा लेता है। कमाल है मीठे बाबा के प्यार की, जो साकार में एक एक बच्चे को इतना प्यार देकर मायावी दुनिया से निकाल लिया। फिर अव्यक्त हो करके कितनी पालना दी। यह तो आप सबने देखा और अनुभव किया है। बाबा के प्यार की ही कमाल है जो इस नर्क की दुःखमय दुनिया को बदलने के लिये बच्चों से कितनी सेवायें करा रहा है। हमारा धर्म ही है ऊंचे कर्म करना। जो कर्म इगो, अटैचमेंट से फ्री है उसे ही ऊंचा कर्म कहेंगे। अभी हमारे कर्म इतने श्रेष्ठ हों जिससे मेरे तो विकर्म विनाश हों पर औरों के भी विकर्म विनाश हो जायें। मेरी भावना है बाबा के बच्चे जो करना है सो अब कर लें क्योंकि कल किसने देखा! अभी तक जो हुआ सो ड्रामा। ड्रामा में जो होना है वही हो रहा है, मुझे इगोलेस बनना है, किसी में भी अटैचमेंट नहीं रखनी है। मैं और मेरे की भाषा ऐसी हो जो निर्मोही, नष्टोमोहा, अनासक्त वृत्ति बन जाये।

मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा है, कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। कितना मीठा, कितना प्यारा हमारा बाबा है। मैं तो नींद में भी बाबा-बाबा करती हूँ। परन्तु कई आत्मायें मुझे नींद करने नहीं देती क्योंकि कईयों में अभी तक चटकने, लटकने, अटकने की बीमारी है। इस बीमारी को खत्म करने के लिए अब हर एक को दृढ़ता से संकल्प लेना है। इसके लिए देह में होते न्यारे रहने का अभ्यास करो। कर्म करते भी देह से न्यारे, सेवा के सम्बन्ध में पहले मैं नहीं, पहले आप, ऐसी मीठी भाषा हो। ऐसे अपने ऊपर अटेन्शन रख सदा एक बाबा दूसरा न कोई, ऐसी स्थिति बनानी है। बाबा की कमाल है निश्चयबुद्धि विजयन्ती। चित्त एकाग्र हो तो निश्चय अटूट और स्थिति नेचुरल निश्चित रहती है। मैं औरों को भी कहती हूँ, खुद को भी कहती हूँ "पास्ट इज़ पास्ट"। पास्ट की बातें याद नहीं करो परन्तु मैं अपने पास्ट को अगर इमर्ज करती हूँ तो हमारे जैसा पदमापदम भाग्यशाली कोई नहीं। कदम कदम पर पदमों की कमाई करना बाबा ने सिखाया है। शुरू से मैं झरमुई, झगमुई की आदत से फ्री हूँ। सदा खुश रहती हूँ। बाबा की कई प्रकार की सेवायें खुश रहने से हो रही हैं। क्या, क्यों कहना या सोचना बन्द हो गया। बाबा देखता है बच्चा खुश-राज़ी है, इसलिए सदा सुखी है। दुःख क्या चीज़ है, उसे पता ही नहीं। तो न दुःख दो, न दुःख लो। कोई किसी को दुःख दे रहा है वो भी देखो नहीं। वायुमण्डल ऐसा बनाओ जो दुःख की लेन-देन का रास्ता बन्द हो जाए।

बोलो, हमारे मीठे भाई बहिनें ऐसा ही अटेन्शन रख सदा सुखदाई बन सबको सुख देते, सुख लेते हो ना। बाबा कहते हे मेरे मास्टर दयालु, कृपालु बच्चे, अब दुःखियों पर रहम करो, बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन मुक्तिधाम का गेट खोलने की तैयारी करो। सदा याद रहे अब घर जाना है फिर अपने राज्य में आना है। अच्छा।

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“परमात्म आज्ञाओं को पालन कर दुआओं के अधिकारी बनें”

1) बाप द्वारा जो भी आज्ञायें मिली हुई हैं, वह आज्ञायें ही बाप के कदम हैं। तो कदम पर कदम रखकर चलते चलो। बच्चे माना ही बाप के फुट-स्टैप (पद-चिन्ह) पर चलने वाले। जैसे बाप ने कहा ऐसे किया। बाप का कहना और बच्चों का करना - इसको कहते हैं नम्बरवन आज्ञाकारी।

2) जो बाप का डायरेक्शन है, श्रीमत है, उसको उसी रूप में पालन करना - इसको कहते हैं आज्ञाकारी बनना। ब्राह्मण बच्चों को हर बात में जो डायरेक्शन मिले उसमें एवररेडी रहना है। संकल्प मात्र भी मनमत वा परमत मिक्स न हो, तब कहेंगे श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा।

3) बाप की आज्ञा है 'मुझ एक को याद करो'। अगर इस आज्ञा को पालन करते हैं तो आज्ञाकारी बच्चे को बाप की दुआयें मिलती हैं और सब सहज हो जाता है। जैसे लौकिक संबंध में भी आज्ञाकारी बच्चे पर माँ बाप का बहुत स्नेह होता है। वह है अल्पकाल का स्नेह और यह है अविनाशी स्नेह। यह एक जन्म की दुआयें अनेक जन्म साथ रहेंगी।

4) बापदादा ने अमृतवेले से लेकर रात के सोने तक मन्सा-वाचा-कर्मणा और सम्बंध-सम्पर्क में कैसे चलना है वा रहना है - सबके लिए श्रीमत अर्थात् आज्ञा दी हुई है। हर कर्म में मन्सा की स्थिति कैसी हो उसका भी डायरेक्शन वा आज्ञा मिली हुई है। उसी आज्ञा प्रमाण चलते चलो। यही परमात्म दुआयें प्राप्त करने का आधार है। इन्हीं दुआओं के कारण आज्ञाकारी बच्चे सदा डबल लाइट, उड़ती कला का अनुभव करते हैं।

5) बापदादा की आज्ञा है - किसी भी आत्मा को न दुःख दो, न दुःख लो। तो कई बच्चे दुःख देते नहीं हैं, लेकिन ले लेते हैं। यह भी व्यर्थ संकल्प चलने का कारण बन जाता है। कोई व्यर्थ बात सुनकर दुःखी हो गये, ऐसी छोटी-छोटी अवज्ञायें भी मन को भारी बना देती हैं और भारी होने के कारण ऊंची स्थिति की तरफ उड़ नहीं सकते।

6) बापदादा की आज्ञा मिली हुई है - बच्चे न व्यर्थ सोचो, न देखो, न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ कर्म में समय गंवाओ। आप बुराई से तो पार हो गये। अब ऐसे आज्ञाकारी चरित्र का चित्र बनाओ तो परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे।

7) बाप की आज्ञा है बच्चे अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो, हर कर्म कर्मयोगी बनकर, निमित्त भाव से, निर्माण

बनकर करो। ऐसे दृष्टि-वृत्ति सबके लिए आज्ञा मिली हुई है। यदि उन आज्ञाओं का विधिपूर्वक पालन करते चलो तो सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शान्त स्थिति का अनुभव करते रहेंगे।

8) बाप की आज्ञा है बच्चे तन-मन-धन और जन - इन सबको बाप की अमानत समझो। जो भी संकल्प करते हो वह पॉजिटिव हो, पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। बॉडीकान्सेस के “मैं और मेरेपन से” दूर रहो, यही दो माया के दरवाजे हैं। संकल्प, समय और श्वास ब्राह्मण जीवन के अमूल्य खजाने हैं, इन्हें व्यर्थ नहीं गंवाओ। जमा करो।

9) समर्थ रहने का आधार है - सदा और स्वतः आज्ञाकारी बनना। बापदादा की मुख्य पहली आज्ञा है - पवित्र बनो, कामजीत बनो। इस आज्ञा को पालन करने में मैजारिटी पास हो जाते हैं। लेकिन उनका दूसरा भाई क्रोध - उसमें कभी-कभी आधा फेल हो जाते हैं। कई कहते हैं - क्रोध नहीं किया लेकिन थोड़ा रोब तो दिखाना ही पड़ता है, तो यह भी अवज्ञा हुई, जो खुशी का अनुभव करने नहीं देगी।

10) जो बच्चे अमृतवेले से रात तक सारे दिन की दिनचर्या के हर कर्म में आज्ञा प्रमाण चलते हैं वे कभी मेहनत का अनुभव नहीं करते। उन्हें आज्ञाकारी बनने का विशेष फल बाप के आशीर्वाद की अनुभूति होती है, उनका हर कर्म फलदाई हो जाता है।

11) जो आज्ञाकारी बच्चे हैं वे सदा सन्तुष्टता का अनुभव करते हैं। उन्हें तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता स्वतः और सदा अनुभव होती है। 1- वे स्वयं भी सन्तुष्ट रहते। 2- विधि पूर्वक कर्म करने के कारण सफलता रूपी फल की प्राप्ति से भी सन्तुष्ट रहते। 3- सम्बन्ध-सम्पर्क में भी उनसे सभी सन्तुष्ट रहते हैं।

12) आज्ञाकारी बच्चों का हर कर्म आज्ञा प्रमाण होने के कारण श्रेष्ठ होता है इसलिए कोई भी कर्म बुद्धि वा मन को विचलित नहीं करता, ठीक किया वा नहीं किया। यह संकल्प भी नहीं आ सकता। वे आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते हैं क्योंकि वे कर्म के बन्धन वश कोई कर्म नहीं करते। हर कर्म आज्ञा प्रमाण करने के कारण परमात्म आशीर्वाद की प्राप्ति के फल स्वरूप वे सदा ही आन्तरिक विल पावर का, अतीन्द्रिय सुख का और भरपूरता का अनुभव करते हैं।

13) आज्ञाकारी बच्चे मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने के

कारण माया को दूर से ही पहचान कर विजयी बन जाते हैं।
उन्हों पर माया वार नहीं कर सकती।

14) आज्ञाकारी बच्चे बिना श्रीमत के एक सेकण्ड या एक पैसा भी यूज नहीं कर सकते। जब सब परमात्मा का हो गया तो अपने प्रति या आत्माओं के प्रति यूज कैसे कर सकते। डायरेक्शन प्रमाण कर सकते हैं। नहीं तो अमानत में ख्यानत हो जायेगी। थोड़ा भी धन बिना डायरेक्शन के कहाँ भी कार्य में लगाया तो वह धन, मन को खींच लेगा। और मन, तन को खींच लेगा और परेशान करेगा।

15) जो भी श्रीमत वा आज्ञा समय प्रमाण जिस रूप से मिली हुई है, उसी समय उसी रूप से उसे प्रैक्टिकल में लाओ तो सदा ही ब्रह्मा बाप समान तुरत दानी महापुण्य आत्मा बन नम्बरवन में आ जायेंगे।

16) आज्ञाकारी बनना - यही बाप समान बनने की सहज विधि है। आज्ञाकारी बच्चे सदा श्रीमत पर चलते रहते, उसमें मनमत वा परमत की एडीशन नहीं करते, इसलिए कोई भी परिस्थिति उन्हें नीचे नहीं ला सकती, वे सहज ही विघ्न-विनाशक बन जाते हैं।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

16-02-14

मधुबन

“जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, तन से यज्ञ की सेवा प्यार से करो तो मन अच्छा हो जायेगा”

(दादी जानकी)

संगमयुग पर बाबा ने जो पुरुषार्थ कराया है, जो पुरुषार्थ किया है उसके प्रालब्ध का अनुभव अभी करना है। बाबा ने ऐसा पुरुषार्थ सिखाया है, जो अभी संगम पर चारों सबजेक्ट में नेचुरल प्रालब्ध का अनुभव होता है। सेवाओं की इतनी वृद्धि कैसे हुई है? चारों तरफ विश्व भर में जो सन्देश पहुंचा है जिससे बाबा भी भारत-कल्याणकारी से विश्व-कल्याणकारी कहलाया। अनुभव कहता है पहले ज्ञान इतना नहीं सुनाते थे पर योग का अनुभव पहले बारी मिलने में ही करते थे। एक दो को देख इतना रिगार्ड, इतना प्यार, बहुत खुश होते थे। स्वमान में रह सम्मान देना, यह नेचुरल था। ऐसा क्या पुरुषार्थ किया है जो उसकी प्रालब्ध अभी मिल रही है। सबके साथ सम्बन्ध में आते बात कम करते थे, साइलेंस में ज्यादा रहते थे।

कभी भी भूल से यह कैसे करें, क्या करें, यह शब्द हमारे मुख से नहीं निकला। बिल्कुल सिम्पुल है देह के सम्बन्ध से न्यारा, तो खाना-पहनना, बोलना-चलना सब बदल गया लौकिक बातें कुछ नहीं हैं। बाबा कहता था वॉकिंग भी साइलेंस में करो। यह प्रभु लीला का जो पार्ट है, संगमयुग पर जो अनुभव किया हुआ है, कल्प-कल्प की नूँध हो गई, इसका जो सुख है ना, मैं तो कहेंगी न सिर्फ 21 जन्मों के

लिए है, 84 जन्मों में भी यह संस्कार काम में आये हैं। कभी अशुद्ध खाना मेरे पेट में नहीं गया। अन्तिम जन्म में भी इतने अच्छे हैं। जैसा अन्न वैसा मन। जैसा संग वैसा रंग। यज्ञ की सेवा, कितना भाग्य है! इस तन से यज्ञ की सेवा करने से ही मन अच्छा हो गया है। वन्दरफुल बाबा, वन्दरफुल बाबा की बातें हैं।

जैसे आज थर्ड सण्डे की बात है, बाबा ने यह विश्व-कल्याण अर्थ डायरेक्शन दिया है। तो मेरे ख्याल में 24 ही घण्टा सारे विश्व में इन्टरनेशनल योग चलता होगा। करते हैं ना सभी? कभी भूल से भी यह मिस न हो। बाबा ने कितना अच्छा नियम बनाके दिया है। जैसे 4 सबजेक्ट हैं ज्ञान, योग, धारणा, सेवा। चारों सबजेक्ट का कनेक्शन बहुत है, ज्ञान का योग से, योग का धारणा से। अगर ज्ञान है तो योग कैसा है, ज्ञान योग का सबूत है धारणा, धारणा बताती है कहाँ तक ज्ञान है! योग का ज्ञान है, धारणा का भी ज्ञान है।

भाग्यवान वो जो अपने कर्म से भाग्य बनावे, याद से बल आये। जितना याद में रहो उतना योगबल है। कर्म का फल है। सबसे अच्छी ताकत देने वाला यह फल है। योग का बल, कर्म का फल। योग क्या है? सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ हैं, सर्वशक्तिवान है। अच्छा।

“ब्राह्मणों को सबसे बड़ा दुःख है अपमान का, इच्छा है मान की, अब इनसे परे अभोक्ता बनो, स्वमान में रहो” (दादी जानकी)

बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो खुश न हो। कारण कुछ है ही नहीं, अगर कारण आता भी है तो देखने के लिए कि यह कहाँ तक खुश है? क्योंकि जब से बाबा के बने हैं, बाबा से खुशी मिली है तब तो बाबा के पास बैठे हैं। सेवा भी करते हैं, खुशी मिलती है। अगर मैं एक सब्जेक्ट में भी वीक हूँ तो खुशी नहीं होगी। योग कम होगा तो खुशी नहीं होगी। धारणा में कोई कमी होगी, जो हमारे नियम मर्यादायें बने हुए हैं, उसके अनुकूल अगर नहीं चलते हैं, कुछ भी मिस किया है तो खुशी नहीं होगी। भले सेवा करेंगे क्योंकि सेवा तो चलते-फिरते कोई न कोई सेवा सामने है पर अन्दर खुशी नहीं है।

ज्ञान क्या कहता है? योग अच्छा हो। ज्ञान है हे आत्मा अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो, बस यह है योग। मैं रीयली आत्मा हूँ... देह के भान से परे। देह, दुनिया यहाँ है, जहाँ रावण का राज्य था अभी हम उस राज्य से निकल आये हैं। बाबा ने वहाँ से निकाल लिया है स्व पर राज्य करने के लिए। स्वयं का स्व पर राज्य है, ईश्वर के बच्चे हैं पर सेवाधारी भी हैं। बाबा ने इतनी अच्छी पुरुषार्थ की सहज विधि सिखाई है कि बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश, तो फ्री हो गये। वर्तमान में हैं तो कहेंगे बहुत अच्छा है।

बाबा कितना अच्छा रहमदिल है, फ्राकदिल है, एक ही टाइम में कहता है याद में रहो, योग माना कनेक्शन से माइट मिल जाती है। याद से अचल अडोल हैं, कोई चिंता वा फिकर नहीं, यह अपना अटेन्शन रखना पड़ता है। और योग में बाप, टीचर, सतगुरु वन्दरफुल है। बाबा के हरेक महावाक्यों में बड़ा अर्थ समाया हुआ है। याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे। अभी बाबा का बनने के बाद विकर्माजीत, कोई भूल चूक करके फिर से विकर्म नहीं करो। फिर भी बाबा कहता है अगर भूल की हो तो बाबा को सच सच बताओ। बाबा माफ करने में बहुत होशियार है। अगर मैं सच्ची दिल से बात न करूँ, रियलाइज न करूँ ना.. तो जैसे आज बाबा ने कहा सजायें भी देता है, तो सकाश भी देता है, याद भी देता है इसलिए कर्म में सावधान रहना है। तो जैसे बाबा एक ही टाइम तीन काम

करता है, एक तो विकर्म विनाश भी करता है, दूसरा माफ भी करता है फिर श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति बहुत देता है, इन तीनों बातों का मुझे तो बहुत अच्छा अनुभव है।

फालतू बात याद करके कर्म करने से कोई न कोई रांग काम हो जायेगा, एक्यूरेट नहीं होगा और याद में रहने से बाबा खुश, कर्म भी अच्छे होंगे। यह आँखें भूलें देखने के लिए नहीं हैं, यह कान फालतू सुनने के लिए नहीं हैं। संस्कार अनुसार पहले मन बुद्धि ऐसे चलती थी लेकिन अभी बदल गये हैं, अभी मन शान्त है, बुद्धि शुद्ध है। किसी घड़ी भी मन शान्त रहे, यह बहुत बड़ी बात है, ऑटोमेटिक बुद्धि क्या सोचे, शुद्ध रहने के संस्कार बन रहे हैं। किसी ने क्वेश्चन पूछा सकाश क्या है? सच्चाई और प्रेम की सूक्ष्म स्नेह भरी सकाश मिलती है। कोई भी बात है शरीर को कुछ होता है, सकाश चला रही है। सूक्ष्म ईश्वर स्वयं मेरे ऊपर राजी हो करके सकाश की शक्ति दे रहा है। राजी नहीं होगा तो सकाश नहीं देगा, कहेगा तुम्हारे कर्म तुम जानो क्योंकि पुरुषार्थ में अटेन्शन नहीं है, बाबा को राजी नहीं कर सकेंगे।

ब्राह्मणों को सबसे बड़ा दुःख है अपमान का। इच्छा है मान की, दुःख है अपमान का, जो यह महसूस करते हैं हाथ उठाओ। अब इनसे परे अभोक्ता बनो, स्वमान में रहो। मेरा कोई अपमान करे तो सोचो मेरी टेस्ट लेता है, ऐसे अन्दर ही अन्दर योगी बन करके अपने सहयोगी बनो, अपने को सहयोग दो। योग से सहयोग मिलता है। योग से अन्दर बाबा का सहयोग बहुत है। बाबा ने इतना रॉयल बनाया है इसलिए कभी किसी से सहयोग लेना नहीं पड़ा है, जब जो जरूरत हो वो आपेही बाबा किसी न किसी के थू सहयोग देता है। मैं नहीं समझती हूँ कि बाबा से भी कभी कुछ मांगा होगा।

एक बारी बाबा ने टेस्ट लिया था, कराची में बहुत अच्छा 56 प्रकार का भोजन बनवाया, सभी खाने के लिए ऐसे बैठे थे, बाबा सबको देख रहा था, इतना अच्छा भोजन बना था सबने अच्छी तरह से खाया। रात को क्लास में पूछता है? कौन-सी चीज़ अच्छी थी? तो किसी ने कहा बाबा यह अच्छा था, तो बाबा ने कहा फेल। दूसरे दिन डायरेक्शन दिया अभी सिर्फ डोड़ा, छाँछ मिलेगी। जिसको यह खाना हो वो रहे और जो

समझे मैं बीमार हो जाऊंगा तो उनको दूसरे स्थान पर भेज दूंगा। जो बीमार थे वो बैठ गये रीयली जो बीमार थे वो डोडा छाँछ खाकर वहीं रहे। और जो अच्छे भले थे उन्होंने यह सोचा कि यह रोज कैसे खायेंगे? वो चले गये। ऐसे बाबा ने टेस्ट लिया है। तो ब्रह्माभोजन के लिए इतना रिगार्ड इतना प्यार हो। ड्रामा अनुसार कोई मेरे साथ रहते थे, उनकी भी टेस्ट लेती थी, एक छोटी बहन थी देखेगी खाना अच्छा है, कहेगी मैं खाती हूँ और कभी कहेगी मुझे भूख नहीं है। मैं कहती थी यह तो तुम फेल हो जायेंगी। यह है मन कर्मन्द्रियों को जीतने का पुरुषार्थ करना। आजकल पुरुषार्थ में अटेन्शन कम है। सेवा है, यह है वह है... सेवा भी इतनी हुई है, जो बाबा ने नियम मर्यादायें बनाके दी हैं उनसे सेवा हुई है। ज्ञान योग कितना ऊंचा है, उससे सेवायें हुई हैं।

बाबा कहता है कोई रह न जावे इसलिए सन्देश दो, सन्देश तो सारे विश्व में पता चल गया ब्रह्माकुमारियाँ क्या हैं? कईयों को पता है ज्ञान क्या है? परन्तु पहले जो लाइट लाइट का अनुभव होता था ना, वो अनुभव हो। इतना हमारे योग का बल कर्म का फल हो, जो राइट काम है वही करना है। इतना तो बुद्धि है, विवेक है जो थोड़ा राइट नहीं है वो मुझे नहीं करना है। तो जिसको अन्दर से यह पक्का है कि जो बात ठीक नहीं है वो नहीं करनी है, तो ऑटोमेटिक वो उससे फ्री हो जाते हैं, यह मैं अनुभव से कहती हूँ। किसके दबाव प्रभाव में आ करके कोई गलत काम करते हैं, यह भी माया है। किसी भी कारण से गलत काम करने से खुशी नहीं रहेगी, कोई न कोई प्रकार से सजा मिलेगी। छूटेगा नहीं जब तक रियलाइज नहीं किया है,

माफी नहीं मांगी है।

मम्मा समझाती थी सबसे अच्छी बात है रियलाइजेशन, परिवर्तन उससे आता है। मैं आत्मा हूँ परमात्मा का बच्चा हूँ, कर्मों की गुह्यगति को समझा। अपने को आत्मा समझना माना उसी स्वरूप में उसको याद करना, याद से शक्ति आयेगी तो बाबा की जो नॉलेज है, धारण होगी फिर कर्म अच्छे होंगे, फिर संग अच्छा मिलेगा, धारणा सेवा कराती है। आजकल है सकाश तो खुद को भी देखते हैं, परमात्मा बाप की शिक्षा, समझानी, सावधानी से वो सकाश मिल रही है। कोई पूछते हैं तुम कैसे चलती हो? बाबा अपने को छिपाके बच्चों को आगे रखा है। जो बाबा के अन्तिम घड़ी के महावाक्य हैं ना वो हर घड़ी याद रहें निराकारी, निर्विकारी, निरहकारी। हमारी अन्त मते सो गति वही होवे। निराकारी स्थिति में रहने से निर्विकारी, काम नहीं, कोई क्रोध नहीं। इस पुरुषार्थ में थकना नहीं है। जिसको पढ़ाई से प्यार है ना, उसे पढ़ाई की और पढ़ाने वाले की बहुत कदर होती है, वो कभी थकेंगे नहीं। थकने में आवाज़ चेंज हो जाता है क्योंकि मंजिल ऊंची है फिर मुझे पहुँचना जरूर है, थकना नहीं है इसलिए बाबा कहता है चित्रों के सामने जाके बैठो, यह पुरुषार्थ बहुत अच्छा है। तो समझा, हम अगर बाबा से अच्छी तरह से सकाश ले रहे हैं ना, तो कोई दूर बैठे भी खींच रहे हैं। कोई-कोई अनुभव लिखते हैं, सकाश खींच रहे हैं। अन्त मते का ख्याल रखो। बहुतकाल से जो प्राप्ति है ना वही अन्त मते काम में आयेगी, अभी भी वही काम में आ रही है। ओके।

तीसरा क्लास

“सावधानी से पर का चिन्तन बंद कर, अपने को देखो तो जादू का काम हो जायेगा, जीवन में स्वतः परिवर्तन आ जायेगा”

दादी जानकी जी

शिवबाबा सदा ही शान्तिधाम में रहता है, वहाँ रहने वाला हमको भी शान्ति देने आया है, शान्तिधाम में चलना है। शान्तिधाम में जाने के लिए तैयार हो रहे हैं तो शिवबाबा खुश हो रहा है। अभी तो ब्रह्माबाबा और शिवबाबा दोनों एक ही दिखाई पड़ते हैं, तब तो कहते हैं “बापदादा”। शिवबाबा अकेला नहीं दिखाई पड़ता है, ब्रह्माबाबा के साथ दिखाई पड़ता है।

एक बारी बाबा ने कहा जिन सोया तिन खोया, ऐसी हमारी नींद न होवे। जिन जागा तिन पाया, ऐसी नींद होवे। तिन खोया माना अज्ञान की नींद में सोया, भले वो जागते हैं पर सोये हुए हैं

तो वो समय गंवा रहे हैं। जिन जागा तो बाबा कहता है अब औरों को जगाओ। सतयुग में देवतायें कैसे सोते होंगे, कैसे चलते होंगे। बाबा ने इतनी अच्छी समझ दी है, सावधानी के साथ शिक्षा भी दी है कि मुझे क्या करने का है? बाबा ने जो समझ दी है यानि बुद्धि दी है, उससे जांच करनी है कि राइट क्या है, राँग क्या है? उसके लिए विवेक है, बताता है यह राइट है कर ले। किसने कहा कर ले? समय ने कहा - कर ले, बाबा कहता है - कर ले। यह समय है करने का इसलिए कभी भी कैसे करें, क्या करें? यह नहीं कहो क्योंकि यह बड़ी

भूल है। कोई ऐसे पूछे तो क्या समझेंगे? क्या जवाब देंगे? बाबा कहता है यह करो, ऐसे करो, प्रैक्टिकल करके दिखला रहा है।

कैसे करें क्या करें के बजाए पाँच बातें नेचुरल लाइफ में हो। पहले है पवित्रता, अगर थोड़ा भी अपवित्र यानि यथार्थ संकल्प नहीं है तो चेहरा मुँझा हुआ है। संकल्प मेरा बताता है पवित्रता से योगबल कितना जमा कर रहे हैं। पवित्रता से सत्यता ऑटोमेटिक जीवन में धारण हो जाती है। परमात्मा सत्य है, पवित्रता से बहुत दिल साफ है तो सच्चा रहना, फिर है धैर्यता, थोड़ा भी अधैर्य हुए तो क्वेश्चन उठेगा क्या करूँ, कैसे करूँ? कहाँ गई पवित्रता? कहाँ गई सत्यता? इसलिए नाजुक नहीं बनना है। कभी भी ऐसी फीलिंग आई क्या करूँ, कैसे करूँ... मतलब यह अच्छा नहीं है, शोभता नहीं है। देखा गया है कि कई बाबा के बच्चे हैं थोड़ा कभी भी किसी का अपमान किया है, वो फीलिंग है इसलिए न मैं किसी का अपमान करूँ, न कोई मेरा अपमान करे, पर कोई ने किया तो हर्जा नहीं। पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, फिर है नम्रता और मधुरता। मान का भूखा नहीं, अपमान में फीलिंग नहीं आती। सबसे बड़ी सूक्ष्म इच्छा है - मान की, पर पवित्रता, सत्यता, धैर्यता से

स्वमान में रह सकते हैं। व्यवहार में बड़ों को रिगार्ड देना, समान वालों को रिस्पेक्ट देना नेचुरल है।

बाबा कहते सिर्फ तुम अपना पुरुषार्थ अच्छा करो और जिम्मेवारी भले कुछ नहीं सम्भालो, तुम अपना करो इजी कर दिया। मेरे लिए पुरुषार्थ कोई नहीं करेगा। बाबा भी नहीं करेगा। हम हिम्मत और विश्वास से करेंगे, तो बाबा की मदद काम करती है। अपनी घोट तो नशा चढ़े, घोटना यह शब्द सिर्फ कहने लिए नहीं है, अनुभव की बात है कि अपने को देख औरों का दर्शन बन्द कर, सावधानी से पर का चिंतन बन्द करना जैसे जादू का काम हो जाये, इससे जीवन में बहुत परिवर्तन आयेगा। स्व-चिंतन और पर-चिंतन में कितना अन्तर है, जैसे अन्धे को आँख मिली। स्वचिंतन, शुभ चिंतन में रहने से सब काम आपेही हो जाता है, इसमें बहुत शान्ति से काम लेना होता है। कई जगह मैंने देखा है नाम सेवा है, चिंतन पर का है इसलिए सफलता नहीं मिलती। अपने आप जिनके निमित्त कोई बनते हैं वो करते हैं, जो काम मैं कर भी नहीं सकती हूँ। सिर्फ प्यार से मिलते हैं तो खुश होते हैं, यह अभिमान की खुशी नहीं है, समझ से खुशी है। अच्छा।

“जो बीत चुका उसे बिट्टी लगाओ, हर सेकेण्ड का फायदा लो, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करो” (गुल्जार दादी जी)

मधुबन में संग की मदद है, वायब्रेशन कितना अच्छा है। तो मधुबन में जो सहयोग मिलता है उस सहयोग का लाभ जरूर लेना चाहिए। सिवाए एक के और कोई भी तरफ बुद्धियोग न जाये। बाबा कितना प्यार करता है, कहता है - आओ बच्चे, खाओ, पियो, आराम से रहो और बाप को याद करो। तो यह चांस कम नहीं है, आगे चल कर यह दिन याद आयेगे। इसलिये यहाँ आ करके, इसका महत्व रख करके लाभ उठाना। तो यहाँ के संग का रंग लग जायेगा। कोई भी व्यर्थ संकल्प अगर आपके पास आये तो उसको ऐसे भगाओ जैसे मक्खी-मच्छर को भगाते हैं क्योंकि आप बिजी हैं। जो भरपूर होता है वो हिलता नहीं। तो मन हिले नहीं क्योंकि हम मन के मालिक हैं।

जैसे यह हमारा हाथ है, तो हाथ को जब चाहूँ तब यहाँ से वहाँ करूँ क्योंकि मालिक हूँ ना। वैसे मन सूक्ष्म है। लेकिन है तो मेरा ना। तो मालिक बनकर उस पर अधिकार रखो। ऐसे नहीं मन मेरे को चला रहा है, क्या करूँ..। मेरे अन्दर ऐसा

विचार आ जाता है ना, मन मानता नहीं है ना! समझता भी हूँ - श्रीमत पर चलूँ लेकिन मन मेरे हाथ में नहीं है ना! लेकिन अगर मेरा है तो उसकी मैं मालिक हूँ, जैसे मैं चाहूँ वैसे यूज में आना चाहिए क्योंकि मेरा है, मेरे पर अधिकार होता है। जब चाहते नहीं हैं फिर भी बॉडी कान्सेस में क्यों आते हैं, कारण? क्योंकि 63 जन्म से बॉडी से लगाव का अभ्यास हो गया है। लगाव के कारण न चाहते हुए भी वो याद आता है, बॉडी-कान्सेस भूलना मुश्किल हो गया है क्योंकि उससे प्यार है। ऐसे ही बाबा से अगर हमारा प्यार है तो बाबा को याद करना सहज होना चाहिए, भूलना मुश्किल होना चाहिए।

जबकि बाबा ही मेरा संसार है तो एक ही संसार को याद करना सहज है ना। और बाबा भी एक ही बात कहते हैं कि एक मुझे याद करो। अभी हमारे में से कई ऐसे हैं जो बाबा को याद तो करते हैं लेकिन आत्मा हो करके नहीं करते हैं। अगर हम देहभान में हैं और बाबा-बाबा कह रहे हैं तो बाबा सुनेगा

ही क्यों? क्योंकि वह तो आत्मा का बाबा है। देह का बाबा है ही नहीं। इसलिए कई कहते हैं कि हम बाबा से बातें तो करते हैं, लेकिन हमको जवाब नहीं मिलता है। तो हम कहते हैं चेक करो कि जिस समय बाबा को याद करते हो तो पहला फाउण्डेशन - मैं आत्मा हूँ और आत्मा परमात्मा को याद कर रही हूँ, पहले यह सारा दिन याद रहता है? आत्म-अभिमानि बनके परमात्मा को याद करते हैं? इसीलिए रोज़ की मुरली में बाबा बार-बार कहते रहते हैं कि अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कोई सारा दिन शिवबाबा शिवबाबा... मैं तेरा हूँ... कहता रहे, उससे क्या होगा। वो तो जैसे राम राम.. कहते हैं तो मरा मरा ... हो जाता है। तो उससे क्या फायदा हुआ? लेकिन मैं आत्मा हूँ, आत्मा समझके पिता परमात्मा को याद करो फिर देखो सेकण्ड की बात है क्योंकि आत्मा के लिये सिवाए परमात्मा के और कुछ है ही नहीं क्योंकि आत्मा का सबकुछ है ही परमात्मा। प्राप्ति भी आत्मा को परमात्मा से है, सम्बन्ध भी आत्मा का परमात्मा से है। बाकी चाहिए क्या? प्राप्ति और सम्बन्ध - यही तो दुनिया में भी दो मुख्य बातें हैं। तो चेक करो - हम कैसे याद करते हैं और क्या करते हैं?

हमारा आक्वूपेशन क्या है? मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं विशेष आत्मा हूँ, तो न बॉडी-कॉन्सेस हो, न एक्शन कॉन्सेस हो,

इसके लिये बीच-बीच में (ट्राफिक कंट्रोल के समय या खाते-पीते समय) चेक करके चेंज करो। काम-काज करते भी अपनी आक्वूपेशन नहीं भूलना चाहिए। तो पूरा वर्सा लेने के लिये आपको अपने ऊपर अटेन्शन रखना पड़ेगा। अटेन्शन रखो तो टेन्शन खत्म हो जायेगा। बाकी कार्य-व्यवहार वा सम्बन्ध-सम्पर्क में किसी भी कारण से कुछ भी हो जाता है या कोई समस्या आती है तो भी क्यों, क्या... के चक्कर में अपनी एनर्जी को वेस्ट यूज मत करो क्योंकि संगमयुग अतीन्द्रिय सुख के लिये है, अब नहीं तो कब नहीं। फिर चांस मिलना नहीं है तो कितना अटेन्शन देना चाहिए। एक सेकण्ड भी नहीं गंवाना चाहिए। व्यर्थ को फौरन खत्म करो। बिन्दी लगा दो। ड्रामा में जो हो चुका फुलस्टॉप। बीती सो बिन्दी। बीती से गुण उठा लो (शिक्षा ले लो)। हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो, इससे अलबेलापन भी खत्म हो जायेगा। माया से घबरायेंगे नहीं लेकिन मायाजीत बनेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा करो। बाबा को मायाजीत बच्चे ही अच्छे लगते हैं क्योंकि अगर स्वराज्य नहीं तो विश्व का राज्य नहीं इसलिये स्वराज्य अधिकारी बनो, जो बाबा का प्यार मिलता है उसको लो और बाबा के प्यार से पात्र बन करके बाबा की आशाओं को पूर्ण करो। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

**“अच्छे मैनेर्स रख हर एक को सम्मान दो, डरो नहीं ”
(विशेष तुम्हारियों के प्रति)**

कहा जाता - परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले की वह मिल गया तो फिर घबरायें क्यों? डर किसका? पहले खुद से पूछो कि मुझे किसकी परवाह है? जिसकी परवाह होगी उसका डर जरूर होगा। माँ-बाप की परवाह होगी तो भी डर होगा। एक होता है मैनेर्स रखना, दूसरा होता है डर रखना। तो अपने आप से पूछो मुझे किसका डर है? मामा, काका, चाचा, माँ-बाप.. किसका डर है? फिर पूछो क्या मैं भला अपनी टीचर से डरती हूँ? एक है डर, एक है मैनेर्स। तो टीचर से डरती हो या बड़ी बहन समझ रिस्पेक्ट (सम्मान) देती हो? मैं किसी से भी डरती हूँ तो क्यों? क्या कोई चोरी किया है? गुनाह किया है? गलती की है? डर किस बात का? गलती करेंगे तो डर होगा। कोई भी किसी प्रकार का रांग कर्म करूँगी तो डर होगा। रांग कर्म नहीं तो डर नहीं। समझो कोई थोड़ा ठका करता तो डरती हूँ? छत

गिरेगी, मर जायेंगे। बस इतना ही होगा ना। तुम तो जीते जी मरे हुए हो। एक होता है सम्भालना, दूसरा होता है डरना।

डर पाप कर्म कराता है। डर झूठ बोलने की आदत डालेगा। मान लो मेरे से कोई चीज़ टूट गई। उसे हमने छिपाकर रफा-दफा कर दी, झूठ बोल दिया। फिर एक झूठ के पीछे सौ झूठ बोलने पड़ते। समझते हैं टीचर को बतायेंगे तो डांटेगी। एक होता है लौकिक डर, दूसरा होता है टीचर का डर। टीचर कोई धर्मराज तो नहीं है।

डर क्यों होता? जरूर कोई रांग कर्म करते हैं। मान लो टीचर ने कहा यह काम नहीं करना या यह नहीं कहना। परन्तु कह लेते हैं तो डरते हैं। पहली बात तुमने मना करने पर कही क्यों? तुम्हारे 32 दांत से बात निकली तो दूसरे के 32 दांत से भी निकलेगी। तो डांट तो पड़ेगी ना।

मैं निर्भय और निर्वैर हूँ - यह दो शब्द ऐसे हैं जो स्वयं को बहादुर बना देते हैं। निर्भय रहेंगे तो बुद्धि हर कार्य में राइट रहेगी। नहीं तो राइट बुद्धि भी रांग हो जाती है। फिर हाथ भी कांपते तो बुद्धि भी कांपती है। कुमारियों को डर बहुत होता, पता नहीं क्या होगा, पता नहीं, पता नहीं कहकर पत्ता ही कट जाता। सेन्टर पर रहना माना डर छोड़ना। डर छोड़ो तो हिम्मत हुल्लास और शेरनी होकर रहोगी। मैं बाबा की सेवा पर सच्ची हूँ, तो डरूँ क्यों? कई फिर सच्ची बात पर भी डरते हैं, समझते हैं मेरी सच्ची बात तो मानेंगे नहीं। डर कमजोर बनाता, भयभीत करता। टेन्शन पैदा करेगा, घुटन पैदा करेगा। बीमारी पैदा करेगा। खाना अच्छा नहीं लगेगा, नींद नहीं आयेगी। काम करते घबराते रहेंगे, चिंता पैदा होगी। फिर वह चिंता काम नहीं करने देगी।

किसी बात की परवाह होगी तो डर होगा। निर्भय माना उल्टा नशा नहीं कि मैं ऊपर कहूँगी, मुझे सब पता है आदि। मैंनेस, मुहब्बत और चीज़ है परन्तु निर्भय और चीज़ है। जिसमें सहन-शक्ति होती है उसमें समाने की भी शक्ति होगी। सहन शक्ति नहीं तो समाने की शक्ति नहीं। लौकिक में भी छोटी को हमेशा झुक कर रहना पड़ता। सहन भी करेगी, चुप होकर चलेगी लेकिन अगर तीखी होती तो घर बरबाद कर देती। घर में रहना है तो निभाना है। निभाना माना सहन करना। अगर मुझे दूसरों की दिल को जीतना है तो सहन करना है। सन्तुष्ट करना है तो सहन करना है। वातावरण नहीं बनाना है तो सहन करना है। वायुमण्डल शान्ति का रखना है तो सहन करना है। निभाना अर्थात् सहन करना बहुत बड़ा गुण है। हरेक को सन्तुष्ट रखना और स्वयं से सन्तुष्ट रहना यह भी मेरा गुण है। ड्युटी है। हमारी नैचुरल नेचर ही सहनशीलता की होनी चाहिए। सहनशील होंगे तो डर नहीं रहेगा। सहन करना.. यह भी एक परिवार का प्रेम है। तुम मेरी बात मानों मैं तुम्हारी। जैसे दो दोस्त एक दूसरे की बात को समा लेते, दुश्मन बात को उठाते हैं, फैलाते हैं। कोई को भी दिल से दुश्मन नहीं समझो। हरेक से सीखना है। थोड़ी घड़ी रांग भी हो, कोई बात नहीं। डर निकाल दो तो आगे चल सकेंगे। अगर ससुराल में जाते तो भी निभाना पड़ता है।

सन्तुष्ट रहना और दूसरों को करना - यह हमारा कर्तव्य है। बीमारी आती है मुझे सहन करनी है। दूसरा तो नहीं सहन करेगा। हिसाब-किताब वाले को सहन करना पड़ेगा। दुनिया है ही दर्द भरी। रोयेंगे, चिल्लायेंगे तो दर्द चला जायेगा क्या? नहीं। इसलिए मुझे ही सहन करना है। एक बाबा से भय और किसी से भी भय नहीं। तो निर्भय बनो, सम्मान दो, सम्मान मांगो नहीं। अपने स्वमान में रहेंगे तो सब अपने आप सम्मान देंगे। बाबा यही पाठ वर्तमान समय हम सबको पढ़ा रहा है। अच्छा - ओम् शान्ति।

कार्यशाला - विषय:- विदेही व ज्वाला स्वरूप स्थिति

(अ) परिभाषा:- 1. देह में रहते हुए भी देह के भान से परे, ज्योतिर्मय आत्मा की तरह प्रकाशमान स्थिति ही विदेही स्थिति है। 2. विदेही आत्मा राजा जनक मिसल साधन, सम्पत्ति, राज-पाठ में रहते हुए भी त्यागी और वैरागी होगी। 3. विनाशी दुनिया के रंग-रूप, वस्तु, व्यक्ति, कर्म और सम्बन्ध उन्हें आकर्षित नहीं करेंगे, वे बन्धनमुक्त होंगे। 4. स्व-आत्मा के वास्तविक गुणों में स्थित होना ही विदेही अवस्था है। 5. वे जीते जी मरे हुए होंगे।

(ब) कैसे बनें विदेही?:- 1. निरन्तर यह स्मृति और अभ्यास हो कि अब घर जाना है। 2. बेहद के त्याग और वैराग्य वृत्ति का अभ्यास हो। 3. कर्म करते बीच-बीच में अशरीरी बनने का अभ्यास हो। 4. श्रेष्ठ स्वमान में रहें व एक बाप के लव में लीन रहें। 5. अमृतवेले से श्रेष्ठ और शुभचिन्तन में रहें। 6. स्वयं को अवतरित, पवित्र आत्मा अथवा फरिश्ता समझकर चलें। 7. हर घड़ी अन्तिम घड़ी है, मैं मेहमान हूँ - यही स्मृति रहे। 8. एकान्त में चिन्तन और एकाग्रता का अभ्यास हो। 9. परमात्मा करन-करावनहार है और मैं करनहार हूँ - ऐसा निमित्त भाव रहे। 10. बाप के सदा साथी और साक्षी स्थिति का अभ्यास हो। 11. मैं पन को बाबा में समाते चलें। 12. समझें कि यह दुनिया मरी पड़ी है।

(स) ज्वाला स्वरूप स्थिति एवं उसके द्वारा परिवर्तन:

1. गुण और शक्तियों का शक्तिशाली स्वरूप बनना ही ज्वाला स्वरूप स्थिति है। 2. मन, बुद्धि की एकाग्रता और दृढ़ संकल्प की शक्ति, ज्वाला की तरह विघ्नों को भस्म कर देती है। 3. ऐसी स्थिति स्वयं, संगठन तथा संसार के वातावरण की कमियों को और अशुद्धता को दग्ध कर देती है। 4. ज्वालारूप की स्थिति द्वारा पुराने विकर्म, पुरानी स्मृतियाँ, भूलें, अवज्ञाएं व विकार जलकर समाप्त हो जाते हैं। 5. जैसे कोई भी धातु या सोना अग्नि में जलकर निर्मल हो जाती है उसका रूप बदल जाता है उसी तरह ज्वाला रूप के अभ्यास से हमारी दृष्टि, वृत्ति व्यवहार और चलन, दृष्टिकोण सब कुछ बदल जाता है। 6. नयनों में रूहानियत की झलक और बोल में दिव्यता दिखाई देती है। 7. बेहद की वृत्ति और उपराम स्थिति हो जाती है। 8. ऐसा लगता है कि जैसे काया कल्प हो गया है। 9. मन निर्मल, वाणी निश्छल और कर्म निर्विकारी बन जाते हैं। 10. मैं-पन, मेरे-पन से परे निर्माणता, सन्तुष्टता और सम्पन्ता दिखाई देने लगती है।